24 लेखकों को साहित्य अकादमी पुरस्कार

नई दिल्ली, 25 फरवरी(पुष्पेंद्र मिश्रा): लेखक कुछ अपनी और कुछ दुनिया की बातें दर्ज करता है और उसको आने वाली नस्ल के लिए सौंप कर जाता है। यह अलग बात है कि आने वाली नस्ल तक पहुंचते-पहुंचते इतिहास बदल जाता है। लेखक, गीतकार व फिल्म निर्देशक गुलजार ने यह बात कमानी सभागार में साहित्योत्सव 2020 के अंतर्गत आयोजित हुए साहित्य अकादमी पुरस्कार 2019 के अर्पण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कही।

उन्होंने कहा कि सभी लेखकों ने मानो अपनी जिंदगी चूल्हे पर चढ़ा रखी है और उसमें उबलती हांडियों पर वे अपने जज्बातों को पका रहे हैं। इस दौरान गुलजार ने अपने 37 भाषाओं के प्रति किए जा रहे उस कार्य का भी जिक्र किया। जिसमें उन्होंने इन भाषाओं के कवियों के द्वारा 1947 पर कही गई कविताओं का अनुवाद किया है और महसूस किया है कि उन सबका स्वर एक ही है...और वह है 'एक शहर की तलाश या एक नई सुबह का इंतजार।

गुलजार ने अकादमी पर कहा कि साहित्य अकादमी ने अपने आरंभ से भी अपनी स्वायत्तता बनाए रखी और उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले समय में ये बनी रहेगी। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि भारतीय साहित्य की जो परंपरा है वह है विदेशी साहित्य की परंपरा से किसी भी तरह कम नहीं है। उन्होंने भारतीय साहित्य की सार्वभौमिकता और उसकी भाषाई विविधता को उसकी ताकत मानते हुए कहा कि यह परंपरा भू-मंडलीकरण के इस समय में भी हमारी ताकत है।

कार्यक्रम को संबोधित करते गुलजार

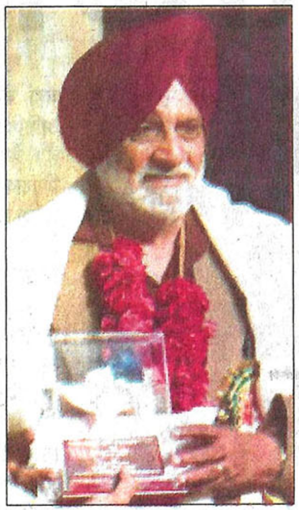
किरपाल कजाक (पंजाबी)

पुरस्कार लेते शशि थरूर (अंग्रेजी)

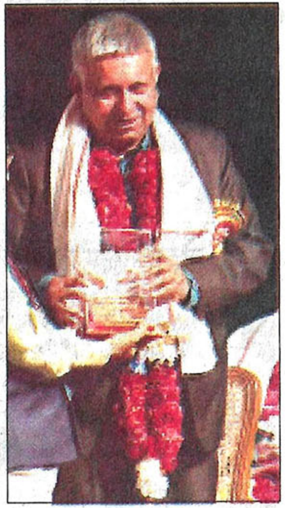
शाफे किदवई (उर्दू)

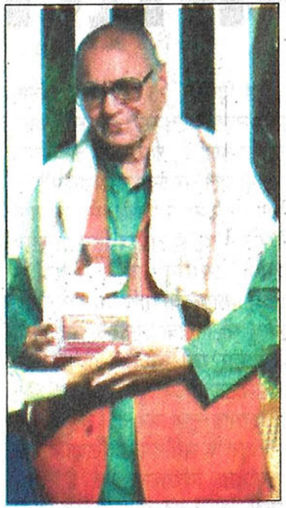
नंदकिशोर आचार्य (हिन्दी)

इन विभूतियों को मिला पुरस्कार

साहित्य अकादमी पुरस्कार 2019 के विजेताओं को मंगलवार को कमानी सभागार में अकादमी अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने पुरस्कार प्रदान किए। जिसमें पुरस्कार विजेताओं को 1 लाख रुपए का चेक, शाल और साहित्य अकादमी अवार्ड शील्ड प्रदान की गई। पुरस्कृत लेखकों में जयश्री गोस्वामी महंत-असमिया, चिन्मय गुहा-बांग्ला, फुकन च. बसुमतारी-बोडो, (स्व.) ओम शर्मा 'जंद्रयाड़ी'-डोगरी, शशि थरूर-अंग्रेजी, रतिलाल वोरीसागर-गुजराती, नन्दकिशोर आचार्य-हिंदी, विजया-कन्नड, अब्दुल अहद हाजिनी कश्मीरी, निलबा अ. खांडेकर-कोंकणी, कुमार मनीष अरविन्द-मैथिली, वि. मधुसूदनन् नायर-मलयालम, बेरिल थांगा-मणिपुरी, अनुराधा पाटील-मराठी, सलोन कार्थक-नेपाली, तरुणकान्त मिश्र-ओड़िया, किरपाल कजाक-पंजाबी, रामस्वरूप किसान-राजस्थानी, पेन्ना मधुसूदन-संस्कृत, कालीचरण हेम्ब्रम-संताली, ईश्वर मूरजाणी-सिंधी, चो. धर्मन-तमिल, बंडि नारायण स्वामी-तेलुगू, एवं शाफे किदवई-उर्दू।

श्रेष्ठ कविता से गुजरना प्रकारांतर से आत्मसृजन की प्रक्रिया से गुजरना है: नंदकिशोर

शब्द नाटक का शरीर है : अर्जुनदेव चारण

साहित्योत्सव में लेखकों ने साझा किए विचार

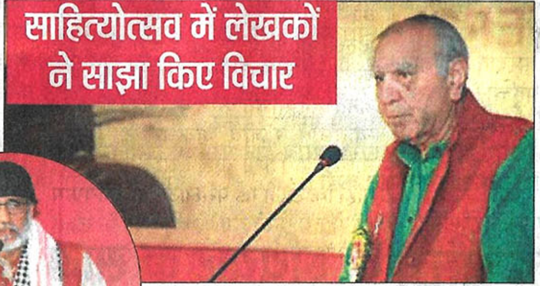

नई दिल्ली, 26 फरवरी(नवोदय टाइम्स): साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव के तीसरे दिन बुधवार को लेखक-सम्मेलन कार्यक्रम के तहत साहित्य अकादमी पुरस्कार-2019 के विजेताओं ने पाठकों के सामने अपने लेखन के रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की। अपने आरंभिक वक्तव्य में उन्होंने कहा कि लेखक का व्यक्तित्व उस आइसवर्ग की तरह है, जिसका 25 प्रतिशत हिस्सा ऊपर होता है और बाकी हिस्सा पानी के अंदर रहता है। आज हम इन लेखकों के उसी छिपे हुए 75 प्रतिशत व्यक्तित्व से रू-ब-रू हो सकेंगे। अपने काव्य संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए पुरस्कृत नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि नए और बदलते आयामों का उद्घाटन ही कविता का धर्म है और यह अन्वेषण ही हमारी शब्द-चेतना के नए आयामों का सृजन संभव करता है जो प्रकारांतर से मानव-चेतना के नए आयामों का सृजन है। कार्यक्रम में अन्य सभी भाषाओं के लेखकों ने अपनी रचना प्रक्रिया को पाठकों के साथ साझा किया।

नाट्य आलेखों में मनमाने बदलावे पर वक्त की चिंता

नाट्य लेखक परिचर्चा का उद्घाटन प्रख्यात राजस्थानी लेखक व वर्तमान में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के कार्यकारी अध्यक्ष अर्जुन देव चारण ने किया। उन्होंने नए निर्देशकों नाट्य आलेखों में मनमाने बदलावे पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह प्रक्रिया भारतीय नाट्य परंपरा को अवरुद्ध करने वाली है। उन्होंने नाट्य निर्देशकों से अपील की कि शब्द नाटक का शरीर होते हैं अतः उनका सम्मान करना जरूरी है। साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि विभिन्न विधाओं के रंगकर्म उनके हृदय के अत्यंत निकट हैं। कोई भी रचना जब नए परिवेश के साथ दर्शकों के सामने प्रस्तुति होती है तो वह भी नई होकर वर्तमान का हिस्सा हो जाती है। परिचर्चा के अगले सत्र में कृष्णा मनवल्ली की अध्यक्षता में अथोकपम खोलचंद्र सिंह, सपनज्योति ठाकुर, शफ ाअत खान और सुमन कुमार ने हिंदी नाट्य लेखन के वर्तमान परिदृश्य पर अपने विचार रखे। साहित्योत्सव में प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यान जिसे प्रणव मुखर्जी द्वारा दिया जाना था। तबीयत ठीक न होने के कारण वह कार्यक्रम में नहीं पहुंच सके, लेकिन मुखर्जी द्वारा उपलब्ध कराए गए लिखित व्याख्यान का पाठ साहित्य अकादमी के अंग्रेजी परामर्श मंडल की संयोजक संयुक्ता दासगुप्ता ने किया।

शशि थरूर, नंदकिशोर आचार्य समेत 24 लेखकों को अकादमी पुरस्कार

■ फिल्म निर्देशक गुलजार ने ये पुरस्कार दिए
■ थरूर 'एन एरा ऑफ डार्कनेस' के लिए सम्मानित

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक और पूर्व केंद्रीय मंत्री शशि थरूर, हिंदी के प्रसिद्ध कवि नाटककार नंद किशोर आचार्य समेत 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों को मंगलवार की शाम साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राजधानी के कमानी सभागार में आयोजित एक गरिमामय समारोह में अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कम्बार और मशहूर गीतकार एवं फिल्म निर्देशक गुलजार ने ये पुरस्कार दिए। समारोह में डोगरी के लेखक ओम शर्मा 'जन्द्रयाडी' को यह पुरस्कार मरणोपरांत प्रदान किया गया। लोकसभा सांसद श्री थरूर को यह पुरस्कार उनकी पुस्तक 'एन एरा ऑफ डार्कनेस' के लिए दिया गया जबकि श्री आचार्य को यह पुरस्कार उनके काव्य संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए दिया गया। समारोह में उर्दू के समालोचक शाफे किदवई को उनकी आलोचनात्मक किताब 'सवाने सरहद' के लिए यह पुरस्कार दिया गया। मैथिली के लिए कुमार मनीष अरविन्द को 'जिनगी ऑरियां औन करैत' कविता संग्रह के लिए यह पुरस्कार दिया गया। पुरस्कार में प्रत्येक विजेता को एक एक लाख रुपए, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न भेंट किया गया। संस्कृत में पेन्ना मधुसूदन कश्मीरी में अब्दुल अहद हाजिनी पंजाबी में किरपाल कज़ाक, बंगला में चिन्मय गुहा, मराठी में अनुराधा पाटिल, तमिल में चो धर्मे न, मलयालम में मधुसूदन नायर कन्नड़ में विजया को गुजराती में रतिलाल बोरीसागर को असमिया में जय श्री गोस्वामी महंत ओडिशा को तरुनकान्ति घोष को तेलुगू में बंडी नारायण स्वामी आदि को दिया गया।

साहित्योत्सव : लेखकों ने अनुभव बताएं

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 26 फरवरी।

साहित्य अकादेमी की ओर से आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव के तीसरे दिन बुधवार को लेखक-सम्मेलन कार्यक्रम के तहत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 के विजेताओं ने पाठकों के सामने अपने लेखन के रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की। असमिया लेखिका जयश्री गोस्वामी महंत ने अपने पुरस्कृत उपन्यास चाणक्य के रचना पर कहा कि वे इसे उपन्यास के रूप में ही पढ़े न किसी इतिहास की पुस्तक की तरह।

मैथिली में पुरस्कृत कुमार मनीष अरविंद ने कहा-वनाधिकारी के रूप में प्राप्त हुए ज्ञान और अनुभव ने मेरे इस विश्वास को लगातार दृढ़ किया कि प्रकृति-संरक्षा का मुद्दा मानवता के वास्ते अहम है। सो यह विषय मेरी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान पाता रहा है। कार्यक्रम में अन्य सभी भाषाओं के लेखकों ने अपनी रचना प्रक्रिया को पाठकों के साथ साझा किया।

नाट्य लेखक वर्तमान परिदृश्य पर आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन प्रख्यात राजस्थानी लेखक और वर्तमान में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के कार्यकारी अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण ने किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षयीय वक्तव्य में कहा कि विभिन्न विधाओं के रंगकर्म उनके हृदय के अत्यंत निकट हैं। कार्यक्रम के अंत में सभी का धन्यवाद देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य अकादेमी नाटकों के अनुवाद व उनकी प्रस्तुति के लिए कई योजनाएं लागू कर रही है। कार्यक्रम का संचालन संपादक हिंदी अनुपम तिवारी ने किया।

पुरस्कृत लेखकों ने साझा किए लेखन के रचनात्मक अनुभव

नई दिल्ली (एसएनबी)। साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित 'साहित्योत्सव' के तीसरे दिन बुधवार को लेखक-सम्मिलन कार्यक्रम के तहत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 के विजेताओं ने पाठकों के सामने अपने लेखन के रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की।

अपने आरंभिक वक्तव्य में उन्होंने कहा कि लेखक का व्यक्तित्व उस आइस वर्ग की तरह है, जिसका 25 प्रतिशत हिस्सा ऊपर होता है और बाकी हिस्सा पानी के अंदर रहता है। आज हम इन लेखकों के उसी छिपे हुए 75 प्रतिशत व्यक्तित्व से रू-ब-रू हो सकेंगे।

असमिया लेखिका जयश्री गोस्वामी महंत ने अपने पुरस्कृत उपन्यास 'चाणक्य' के रचना प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि पंचतंत्र एवं नीति शास्त्र आदि पढ़ते समय उन्हें चाणक्य का पात्र सबसे प्रिय लगा था और तभी से मैंने उन पर एक उपन्यास लिखने योजना बनाई थी। लेकिन मैं फिर भी पाठकों से कहना चाहूंगी कि वे इसे उपन्यास के रूप में ही पढ़ें न किसी इतिहास की पुस्तक की तरह। अपने काव्य संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए पुरस्कृत नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि नए और बदलते आयामों का उद्घाटन ही कविता का धर्म है और यह अन्वेषण ही हमारी शब्द-चेतना के नए आयामों का सृजन संभव करता है जो प्रकारांतर से मानव-चेतना के नए आयामों का सृजन है।

पुरस्कृत गुजराती लेखक रतिलाल बोरीसागर ने अपने वक्तव्य में कहा कि सर्जक की आंतरिक शुद्धि उसकी चेतना को विशेष रूप से सचेत करती है। आंतरिक शुद्धि हरेक मनुष्य का कर्तव्य है, लेकिन सर्जक का तो कर्तव्य के अलावा उत्तरदायित्व भी है। मैथिली में पुरस्कृत कुमार मनीष अरविंद ने कहा, एक वनाधिकारी के रूप में प्राप्त हुए ज्ञान और अनुभव ने मेरे इस विश्वास को लगातार दृढ़ किया कि प्रकृति-संरक्षण का मुद्दा मानवता के वास्ते अहम है। सो यह विषय मेरी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान पाता रहा है। कार्यक्रम में अन्य सभी भाषाओं के लेखकों ने अपनी रचना प्रक्रिया को पाठकों के साथ साझा किया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के कार्यकारी अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण ने भारतीय नारी परंपरा का जिक्र करते हुए कहा कि किसी भी परंपरा का अनुकरण करना किसी बोझ को ढोना नहीं है बल्कि कोई परंपरा अपने आपको वर्तमान में ढालने के लिए हमेशा सजग रहती है। आगे उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन बेहद सूक्ष्म होता है लेकिन यह परंपरा को हमेशा आधुनिक बनाए रखता है।